



भारतीय  
प्रौद्योगिकी  
संस्थान  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

IIT

INDIAN  
INSTITUTE OF  
TECHNOLOGY  
BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : [pro.ppc@itbhu.ac.in](mailto:pro.ppc@itbhu.ac.in)

कुलसचिव कार्यालय  
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)



Office of the Registrar  
(Press & Publicity Cell)

दिनांक : 29.03.2019

# हॉपर रिपल्शन सेग्रीगेटर मशीन

## ■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

गरीब छोटे लघु और सीमांत किसानों को ध्यान में रखकर आईआईटी बीएचयू के वैज्ञानिकों ने महंगे थ्रेसर मशीन का विकल्प तैयार किया है। यह हॉपर रिपल्शन सेग्रीगेटर मशीन के दो प्रारूप छोटा और बड़ा तैयार है। कम लागत कि वजह से यह गरीब छोटे किसानों के लिए कृषि के क्षेत्र में बड़ा आविष्कार माना जा रहा है। इस मशीन से एक साथ कई दालों को कूटा भी जा सकता है। साथ ही धान और गेहूँ को भूसी से अलग करने में भी यह मशीन माहिर है। इसका छोटा मॉडल मात्र 4000 और बड़ा मॉडल 9000 रुपये का किसानों को पड़गा। बड़े मॉडल से किसान दो क्विंटल तक के अनाज व दलहनी व तिलहनी किस्मों को निकाल सकते हैं।

इस मशीन का आविष्कार करने वाले आईआईटी के स्कूल ऑफ बायोकेमिकल इंजीनियरिंग के डा. विशाल मिश्रा ने आईआईटी में गुरुवार को आयोजित पत्रकार वार्ता में बताया कि यह मशीन का डिजाइन इस प्रकार से किया गया है कि यह कम लागत, कम रखरखाव की आवश्यकता हों। मशीन कुल 48 वॉट का करंट लेती है। डिजाइन किये गये नये सेग्रीगेटर में दो मिश्रणों का पृथक्करण बहुत ही कम समय में किया जा सकता है। कम लागत कि वजह से गरीब छोटे से छोटे किसानों के उद्देश्यों की पूर्ति जैसे आसानी के साथ अनाज को स्टोर करने, अलग करने,



आईआईटी बीएचयू के युवा  
वैज्ञानिकों का कारनामा

महंगी थ्रेसर मशीन की लेगी जगह  
कम ऊर्जा और कम लागत है  
खासियत

और मिश्रण करने की सुविधा वो भी कम ऊर्जा में इस मशीन की खासियत है। अलग अलग वजन के हल्के और भारी अनाज पृथक्करण के लिए इस सेग्रीगेटर मशीन का उपयोग किया जा सकता है। उन्होने बताया कि हॉपर में होने वाली घटनाएँ जैसे कि रैथोलिंग, आर्किंग और ब्रिजिंग खाद एवं भैषजिकी उद्योगों में एक मुख्य नुक्सान है। मगर आईआईटी के स्कूल ऑफ बायोकेमिकल इंजीनियरिंग के वैज्ञानिकों के द्वारा आविष्कार किये गये इस नवीन हॉपर इन समस्याओं को कम करता है। इसे कम लागत में बनाया जा सकता है और

बिना किसी उर्जा के ये काम करता है। विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों में समस्याओं को कम करने के लिए इस नए डिजाइन किए गये हॉपर को मिश्रण करने के साथ साथ विभिन्न अनाजों, पाउडर आदि को स्टोर करने के मामले में फायदेमंद है। डा. मिश्रा ने बताया कि

गोलियों और गोलियों के निर्माण के दौरान दवा को हॉपर के माध्यम से एक टैबलेट में भेजा जाता है। इस मशीन पांच गीयर वाली मशीन का प्रौद्योगिकी हस्तांतरण गेटर नोयडा स्थित एक कंपनी को आईआईटी में 9 फरवरी 2019 को एक एमओयू के तहत किया गया था। 20000 लाख में प्रौद्योगिकी ट्रांसफर का पेटेंट आईआईटी के ही पास रहेगा। जिसके तहत कंपनी प्रत्येक यूनिट की सेल पर आईआईटी को रायल्टी देगी। इसमें हॉपर के साथ रिपल्शन सेग्रीगेटर की पूरी एसेम्बली पर पेटेंट है।

टीम के सदस्य : इस मशीन के शोध और आविष्कार में डा. विशाल मिश्रा के साथ 12 सदस्यों की पूरी टीम है। जिसमें प्रियंका यादव, वीर सिंह, विपुल यादव, ज्योति सिंह, अशोक पॉल, विशाल सिंह, मनीषा वर्मा, केश्री विजय नागा, ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी, अंजनी कुमार, अवंति गुप्ता और प्रिया सिंह है। पत्रकारवार्ता में आईआईटी पीआर सेल के उत्कर्ष मौजूद थे।